इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है, "फटा सुर न बख्शों। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

सन् 2000 की बात है। पक्का महाल (काशी विश्वनाथ से लगा हुआ अधिकतम इलाका) से मलाई बरफ़ बेचने वाले जा चुके हैं। खाँ साहब को इसकी कमी खलती है। अब देशी घी में वह बात कहाँ और कहाँ वह कचौड़ी-जलेबी। खाँ साहब को बड़ी शिद्दत से कमी खलती है। अब संगतियों के लिए गायकों के मन में कोई आदर नहीं रहा। खाँ साहब अफसोस जताते हैं। अब घंटों रियाज़ को कौन पूछता है? हैरान हैं बिस्मिल्ला खाँ। कहाँ वह कजली, चैती और अदब का जमाना?

सचमुच हैरान करती है काशी–पक्का महाल से जैसे मलाई बरफ़ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गईं। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की भाँति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ़ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त 2006 को संगीत रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

© NCERT not to be republished

1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?
2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?
3. सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?
4. आशय स्पष्ट कीजिए–
   (क) 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।'
   (ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'
5. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?
6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि–
   (क) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।
   (ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे।
7. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया?

रचना और अभिव्यक्ति

8. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?
9. मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।
10. बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

भाषा–अध्ययन

11. निम्नलिखित मिश्र वाक्यों के उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए–
   (क) यह ज़रूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।
   (ख) रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।
   (ग) रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।
   (घ) उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।

© NCERT not to be republished

(ङ) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है।

(च) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

12. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्रित वाक्यों में बदलिए–

(क) इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं।

(ख) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्‌भुत परंपरा है।

(ग) धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं।

(घ) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

पाठेतर सक्रियता

- कल्पना कीजिए कि आपके विद्यालय में किसी प्रसिद्ध संगीतकार के शहनाई वादन का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की सूचना देते हुए बुलेटिन बोर्ड के लिए नोटिस बनाइए।
- आप अपने मनपसंद संगीतकार के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।
- हमारे साहित्य, कला, संगीत और नृत्य को समृद्ध करने में काशी (आज के वाराणसी) के योगदान पर चर्चा कीजिए।
- काशी का नाम आते ही हमारी आँखों के सामने काशी की बहुत-सी चीज़ें उभरने लगती हैं, वे कौन-कौन सी हैं?

© NCERT not to be republished

शब्द-संपदा

ड्योढ़ी	–	दहलीज़
नौबतखाना	–	प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान
रियाज़	–	अभ्यास
मार्फ़त	–	द्वारा
शृंगी	–	सींग का बना वाद्ययंत्र
मुरछंग	–	एक प्रकार का लोक वाद्ययंत्र
नेमत	–	ईश्वर की देन, सुख, धन दौलत
सज़दा	–	माथा टेकना
इबादत	–	उपासना
तासीर	–	गुण, प्रभाव, असर
श्रुति	–	शब्दध्वनि
ऊहापोह	–	उलझन, अनिश्चितता

तिलिस्म	–	जादू
गमक	–	खुशबू, सुगंध
अज़ादारी	–	मातम करना, दुख मनाना
बदस्तूर	–	कायदे से, तरीके से
नैसर्गिक	–	स्वाभाविक, प्राकृतिक
दाद	–	शाबासी
तालीम	–	शिक्षा
अदब	–	कायदा, साहित्य
अलहमदुलिल्लाह	–	तमाम तारीफ़ ईश्वर के लिए
जिजीविषा	–	जीने की इच्छा
शिरकत	–	शामिल होना

यह भी जानें

सम – ताल का एक अंग, संगीत में वह स्थान जहाँ लय की समाप्ति और ताल का आरंभ होता है।

श्रुति – एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय का अत्यंत सूक्ष्म स्वरांश

वाद्ययंत्र – हमारे देश में वाद्य यंत्रों की मुख्य चार श्रेणियाँ मानी जाती हैं–

तत-वितत – तार वाले वाद्य–वीणा, सितार, सारंगी, सरोद

सुषिर – फूँक कर बजाए जाने वाले वाद्य–बाँसुरी, शहनाई, नागस्वरम्, बीन

घनवाद्य – आघात से बजाए जाने वाले धातु वाद्य–झाँझ, मंजीरा, घुँघरू

अवनद्ध – चमड़े से मढ़े वाद्य–तबला, ढोलक, मृदंग आदि।

चैती

चढ़ल चइत चित लागे ना रामा
बाबा के भवनवा
बीर बमनवा सगुन बिचारो
कब होइहैं पिया से मिलनवा हो रामा
चढ़ल चइत चित लागे ना रामा

ठुमरी

बाजुबंद खुल-खुल जाए
जादू की पुड़िया भर-भर मारी
हे! बाजुबंद खुल-खुल जाए

© NCERT not to be republished

टप्पा

बागाँ विच आया करो
बागाँ विच आया करो
मक्खियाँ तों डर लगदा
गुड़ ज़रा कम खाया करो।

© NCERT not to be republished

दादरा

तड़प तड़प जिया जाए
साँवरिया बिना
गोकुल छाड़े मथुरा में छाए
किन संग प्रीत लगाए
तड़प तड़प जिया जाए